Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ

(अल् बक़रः **:(186)**

अनुवाद : रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन इन्सानों के लिए एक महान हिदायत के तौर पर उतारा गया और ऐसे खुले खुले निशानात के तौर पर जिनमें हिदायत की तफ़सील और हक़ और झूठ में अंतर कर देने वाले उमूर हैं। अतः जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो इसके रोज़े रखे।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 15

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

12 रमज़ान 1443 हिज्री कमरी, 14 शहादत 1401 हिज्री शम्सी, 14 अप्रैल 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रमज़ान की श्रेष्ठता

(1898) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं।

(1899) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब रमज़ान का महीना आ जाता है तो आसमान के दरवाज़े खोले जाते हैंऔर जहन्नुम के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और शेतान ज़ंजीरों में जकड़ दिए जाते हैं।

(1901) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो कोई लैलतुल क़द्र में ईमान रखकर सवाब की नीयत से इबादत में खड़ा हो, उसके अगले पिछले गुनाह बख़श दिए जाऐंगे और जो कोई रमज़ान के रोज़े ईमान के साथ सवाब की नीयत से रखेगा, उसके अगले गुनाह बख़श दिए जाऐंगे।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् सौम, मुद्रित 2008 क़ादियान)

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ से रमज़ान के महीने की अज़मत मालूम होती है

सूफ़ियों ने लिखा है कि यह महीना तनवीर-ए- क़लब के लिए उत्कृष्ट महीना है, प्रचुरता से इस में मुकाशफ़ात होते हैं

सलात तज़किया नफ़्स (नमाज़ शरीर का शुद्धिकरण) करती है और सौम तजल्ली क़लब (रोज़ा हृदय को अध्यात्मज्योति प्रदान) करता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मग़रिब की नमाज़ से चंद मिनट पूर्व रमज़ान के महीने का चांद देखा गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मग़रिब की नमाज़ गुज़ार कर मस्जिद की छत पर तशरीफ़ ले गए कि चांद को देखें और देखा और फिर मस्जिद में तशरीफ़ लाए।

फ़रमाया कि पिछला रमज़ान ऐसा मालूम होता है जैसे कल गया था। شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ भी एक वाक्य है जिससे रमज़ान के महीने की श्रेष्ठता मालूम होती है सूफ़ियों ने लिखा है कि यह महीना तनवीर क़लब के लिए उम्दा महीना है। प्रचुरता से इस में मुकाशफ़ात होते हैं। सलात तज़किया नफ़्स करती है और सौम तजल्ली क़लब करता है। तज़किया नफ़्स से मुराद यह है कि नफ़्स-ए-अम्मारा (तामसिक वृत्ति) की शहवात से दूरी प्राप्त हो जाए और तजल्ली क़लब से यह मुराद है कि कशफ़ का दरवाज़ा उस पर खुले कि ख़ुदा को देख लेवे। اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ में यही इशारा है। इस में शक-ओ-शुबा कोई नहीं है रोज़े का अज्र अज़ीम है लेकिन अमराज़ और अग़राज़ इस नेअमत से इन्सान को वंचित रखते हैं मुझे याद है कि जवानी के दिनों में मैं ने एक दफ़ा ख़ाब में देखा कि रोज़ा रखना अहल-ए-बैत की सुन्नत है। मेरे हक़ में पैग़ंबर ख़ुदा ने फ़रमाया: سَلْمَانُ مِنَّا اَهْلَ الْبَيْتِ अर्थात الصُّلَحَان कि इस शख़्स के हाथ से दो सुलह होंगी। एक अंदरूनी दूसरी बैरूनी और यह अपना काम नम्रता से करेगा न कि तलवार से और मैं मशरब हुसैन पर नहीं हूँ कि जिसने जंग की बल्कि मशरब हुस्न पर हूँ कि जिसने जंग नहीं की, मैंने समझा कि रोज़े की तरफ़ इशारा है इस लिए मैंने छः माह तक रोज़े रखे। इस अस्ना में मैंने देखा कि अनवार के सतूनों के सतून आसमान पर जा रहे हैं यह बात मुश्तबा है कि अनवार के सतून ज़मीन से आसमान पर जाते थे या मेरे हृदय से लेकिन यह सब कुछ जवानी में हो सकता था और अगर उस वक़्त मैं चाहता तो चार साल तक रोज़ा रख सकता था।(मल् फ़ूज़ात, भाग तीन, पृष्ठ 424 मुद्रित 2018 क़ादियान)

रोज़े का एक अध्यात्मिक लाभ यह है कि इन्सान का ख़ुदा तआला से आला दर्जा का मिलाप हो जाता है और ख़ुदा तआला ख़ुद उसका संरक्षक बन जाता है

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं :

रोज़ों का एक अध्यात्मिक फ़ायदा यह भी है कि इस से इन्सान ख़ुदा तआला से समानता इख़्तियार कर लेता है। ख़ुदा तआला की एक सिफ़त यह है कि वे नींद से पाक है। इन्सान ऐसा तो नहीं कर सकता कि वह अपनी नींद को बिल्कुल छोड़ दे परन्तु वह अपनी नींद के एक हिस्सा को रोज़ों में ख़ुदा तआला के लिए क़ुर्बान ज़रूर करता है सहरी खाने के लिए उठता है तहज्जुद पढ़ता है। औरतें जो रोज़ा नहीं भी रखें वह सहरी के इंतिज़ाम के लिए जागती हैं। कुछ वक़्त दुआओं में और कुछ नमाज़ में गुज़रना पड़ता है और इस तरह रात का बहुत कम हिस्सा सोने के लिए बाक़ी रह जाता है और काम करने वालों के लिए तो गर्मी के मौसम में दो तीन घंटे ही नींद के लिए बाक़ी रह जाते हैं। इस तरह इन्सान को अल्लाह तआला से एक समानता पैदा हो जाती है। इसी तरह अल्लाह तआला खाने पीने से पाक है। इन्सान खाना पीना बिल्कुल तो नहीं छोड़ सकता परन्तु फिर भी रमज़ान में अल्लाह तआला से वह एक प्रकार की समानता ज़रूर पैदा कर लेता है फिर जिस तरह अल्लाह तआला से ख़ैर ही ख़ैर ज़ाहिर होता है इसी तरह इन्सान को भी रोज़ों में ख़ासतौर पर नेकियां करने का हुक्म है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है जो व्यक्ति ग़ीबत, चुग़ल-ख़ोरी और बद-गोई इत्यादि बुरी बातों से परहेज़ नहीं करता उसका रोज़ा नहीं होता। मानों मोमिन भी कोशिश करता है कि इस से ख़ैर ही ख़ैर ज़ाहिर हो और वह ग़ीबत और लड़ाई झगड़े से बचता रहे। इस तरह वह इस हद तक ख़ुदा तआला से समानता पैदा कर लेता है जिस हद तक हो सकती है और यह ज़ाहिर है कि हर चीज़ अपनी मिसल की तरफ़ दौड़ती है। फ़ारसी में कहावत है कि "کند ہمجنس باہم جنس پرواز" अतः रोज़े का एक अध्यात्मिक फ़ायदा यह है कि इन्सान का ख़ुदा तआला से आला दर्जा का मिलाप हो जाता है और ख़ुदा तआला ख़ुद उसका संरक्षक बन जाता है।
(तफ़्सीर कबीर, भाग 2, पृष्ठ 378 मुद्रित 2010 ई. क़ादियान)

127वां जलसा सालाना क़ादियान
23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन ॥ (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

“कसम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है यदि मुझे यक़ीन हो कि दरिंदे मुझे नोच खाएँगे तो भी मैं उसामा के लश्कर के बारे में रसूलुल्लाह के जारी फ़र्मूदा फ़ैसले को नाफ़िज़ करके रहूँगा (हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताएं और गुण

क्या तुम यह चाहते हो कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अबू क़हाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम यह करे कि जिस लश्कर को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रवाना करने का हुक्म दिया था उसे रोक ले?

ख़ुदा की कसम यदि ज़कात देने से इंकार करने वाले मुझे एक रस्सी देने से भी इंकार करेंगे जिसे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में अदा किया करते थे तो भी मैं उनसे जंग करूँगा

असीराने राह़-ए-मौला आदरणीय महमूद इक़बाल हाश्मी साहिब आफ़ लाहौर की माता आदरणीया सय्यदा केसरा ज़फ़र हाश्मी साहिबा की विशेषताओं का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो’मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त के बाद जिन मुश्किलात का सामना करना पड़ा, उनका वर्णन हो रहा था। उनमें से पहली मुश्किल जो वर्णन की गई थी वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का दुःख था जो हर मुस्लमान को था लेकिन सबसे बढ़कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जो बचपन के साथी थे उनको बहुत ज़्यादा दुख था और इस के इलावा उनका प्रेम का जो स्थान था और बैअत की गहराई में जा कर उस की समझ थी वह किसी और को तो नहीं थी लेकिन इस वक़्त उन्होंने बड़े साहस का प्रदर्शन किया, ईमान का प्रदर्शन किया। यह बयान हुआ है कि पहला नाज़ुक और होलनाक मरहला तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का सदमा था कि जिससे सारे सहाबा मारे ग़म के दीवाने हो रहे थे। मौत के इस अचानक सदमे से कोई सँभल नहीं पा रहा था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जुदाई का कोई तसव्वुर भी नहीं कर सकता था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का हादिसा इस क़दर कठोर और दर्दनाक था कि बड़े बड़े सहाबा मारे ग़म के हवास खो बैठे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बहादुर का मुहब्बत की इस दीवानगी में और भी बुरा हाल था। वह तलवार लेकर खड़े हो गए कि अगर किसी ने यह कहा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए हैं तो मैं उस का सिर शरीर से अलग कर दूँगा और यह एक ऐसी प्रतिक्रिया थी कि मुस्लमान इस बात को सुनकर उस कठिनाई की अवस्था में ग्रस्त हो गए थे कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वास्तव में फ़ौत हो गए हैं कि नहीं और क़रीब था कि ये उश्शाक नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेम में तौहीद के बुनियादी सबक़ को भूलते हुए यह कहने लग जाते कि नहीं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी फ़ौत नहीं हो सकते और न ही फ़ौत हुए हैं। उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद नब्वी में तशरीफ़ लाए और वहां जमा शूदा सब लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया। हे लोगो!

مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَإِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ۔

जो व्यक्ति मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत करता था वह सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो चुके हैं और जो कोई व्यक्ति अल्लाह तआला की इबादत करता था वह ख़ुश हो जाए कि अल्लाह तआला ज़िंदा है और कभी फ़ौत नहीं होगा। बावजूद बे-इंतिहा मुहब्बत के जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आप रज़ियल्लाहु अन्हु को थी जिसका कोई मुक़ाबला ही नहीं था लेकिन तौहीद का दरस आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया।

फिर फ़रमाया।

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ (आले इमरान :145)

कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल अल्लाह के एक रसूल थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पहले जितने रसूल गुज़रे हैं सब फ़ौत हो चुके हैं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क्यों न फ़ौत होंगे। अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो जाऐंगे या क़तल किए जाऐंगे तो क्या तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे और इस्लाम को छोड़ दोगे? इस तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कमाल हिम्मत और हिक्मत से इस वक़्त ग़म की इस कैफ़ीयत में सहाबा की ढारस बंधाई और ग़म के मारे इन उश्शाक के दिलों पर मरहम लगाने का कारण बने और दूसरी तरफ़ तौहीद की लरज़ती हुई इमारत को सँभाला दिया।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के अनुसार जिसमें आप फ़रमाते हैं “और फिर वे ख़्यालात जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी के बारे में कुछ सहाबा के दिल में पैदा हो गए थे एक आम जलसे में क़ुरआन शरीफ़ की आयत का हवाला देकर इन समस्त विचारों को दूर कर दिया और साथ ही इस ग़लत ख़्याल का भी अंत कर दिया जो हज़रत मसीह की हयात की निसबत अहादीस नब्वी में पूरा ग़ौर न करने की वजह से कुछ के दिलों में पाया था।” (तोहफ़ा गोल्ड़विया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 17 पृष्ठ 184)

दूसरा बड़ा काम या सदमा जो पहुंचा, और किस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर क़ाबू पाया या अंजाम दिया। वह दूसरा बड़ा काम है इंतिख़ाब-ए-ख़िलाफ़त के वक़्त मुसलामानों को इत्तिफ़ाक़ की लड़ी में, इत्तिहाद की लड़ी में पिरोना।

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जो एक दूसरा मुम्किना संदेह पैदा हुआ वह सक़ीफ़ा बनू साअदा में अंसार का इजतिमा था जहां

शेष पृष्ठ 6पर

इस्लाम ने महिला को अपने पति की वफ़ात पर चार माह दस दिन तक दुःख करने का आदेश दिया है और इस में किसी प्रकार की कोई छूट नहीं रखी और न ही इस आदेश में आयु की कोई रियाइत रखी है

विधवा के लिए ज़रूरी है कि वह इद्दत का समय जहाँ तक सम्भव हो अपने घर में गुज़ारे, इस दौरान उसे बनाओ सिंघार करने, सोशल प्रोग्रामों में हिस्सा लेने और बग़ैर ज़रूरत घर से निकलने की आज्ञा नहीं

इद्दत के समय के दौरान विधवा अपने पति की क़ब्र पर दुआ के लिए जा सकती है इस शर्त के साथ कि वह क़ब्र उसी शहर में हो जिस शहर में विधवा की रिहायश है

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर
(क़िस्त9)

प्रश्न : महिलाओं के अपने चेहरा पर पलकिंग और थ्रेडिंग इत्यादि करने तथा शरीर पर तसावीर गुदवाने ने के बारे में प्रश्न प्रस्तुत होने पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 2 फ़रवरी 2019 ई. में निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : हदीसों में मोमिन महिलाओं को अपने जिस्मों पर अलग तसावीर बनवाने, चेहरे के बाल नोचने, ख़ूबसूरती और जवान नज़र आने के लिए सामने के दाँतों में दूरी पैदा करने, नकली बालों के लगाने, अल्लाह की बनाएं हुए में तबदीली करने इत्यादि विषयों से मना फ़रमाया गया है, इस के अलग कारण हैं।

यदि इन बातों से इन्सान के जिस्मानी बनावट तथा चालचलन में इस तरह का बनावटी परिवर्तन हो जाए कि मर्द और महिला का अंतर जो ख़ुदा तआला ने इन्सानों में रखा है वह ख़त्म हो जाए। या उस किस्म के कर्यों से शिर्क जो सबसे बड़ा गुनाह है इस की तरफ़ लगाव पैदा होने का अंदेशा हो तो इस से मना फ़रमाया गया। फिर हदीसों में जहां उन विषयों से मना किया वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी डराया कि बनीइस्राईल उस वक़्त हलाक हुए जब उनकी महिलाओं ने इस किस्म के काम शुरू किए। अतः इस से इस्तिदलाल हो सकता है कि यहूद जिनके हाँ व्यभिचार फैल चुका था और वेश्यावृत के अड्डे क़ायम हो गए थे, इस काम में ग्रस्त महिलाओं, मर्दों को अपनी तरफ़ आकर्षित करने की ख़ातिर इस किस्म के हथकंडे इस्तिमाल करती हों, इसलिए रसूल-ए-ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन कामों की बुराई वर्णन फ़र्मा कर मोमिन महिलाओं को इस से मना फ़रमाया।

अतिरिक्त इसके यह भी सम्भव है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ये इरशाद उस वक़्त के हालात के पेश-ए-नज़र वक़्ती हो, बिल्कुल इसी तरह जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक इलाक़ा के इस्लाम क़बूल करने वाले लोगों को इस इलाक़ा में शराब बनाने के लिए इस्तिमाल होने वाले बर्तनों के आम इस्तिमाल से मना फ़र्मा दिया था। लेकिन जब उन लोगों में इस्लामी तालीम अच्छी तरह रच बस गई तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इन बर्तनों के आम इस्तिमाल की आज्ञा दे दी।

इस्लाम ने कर्मों की निर्भरता नीयतों पर रखीं है। अतः उस ज़माना में भी यदि इन कामों के परिणाम में किसी बुराई की तरफ़ लगाव पैदा हो या इस्लाम के किसी स्पष्ट आदेश की ना-फ़रमानी होती हो तो ये काम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उस मनाही के तहत ही शुमार होगा। जैसा कि इस ज़माना में भी महिलाएं अपनी सफ़ाई या वैक्सिंग इत्यादि करवाते वक़्त यदि पर्दा का इल्तिज़ाम न करें और दूसरी महिलाओं के सामने उनके सत्तर की बेपर्दगी होती हो तो यह निर्लज्जता है जिसकी आज्ञा नहीं है और शायद ये महिलाएं इसी मनाही के अंतर्गत आती हैं। लेकिन पर्दा के इस्लामी आदेश की पाबंदी के साथ यदि कोई महिला इन चीज़ों से फ़ायदा उठाती है तो इस में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार किया कि क्या एक सफ़र में एक से ज़्यादा उमरे करने बेहतर हैं या एक उमरा करने के बाद बाक़ी वक़्त अन्य इबादात में गुज़ारा जाए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 2 फ़रवरी 2019 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से साबित है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक सफ़र में एक ही उमरा फ़रमाया। लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहीं इस की मनाही नहीं फ़रमाई कि एक सफ़र में एक से अधिक उमरे नहीं हो सकते। इसलिए यदि कोई व्यक्ति हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार एक सफ़र में केवल एक ही उमरा करे और बाक़ी वक़्त अन्य इबादात में गुज़ारे तो ये भी ठीक है और यदि वह एक से ज़्यादा उमरे करना चाहे तो चूँकि उमरे में भी अल्लाह तआला के घर का तवाफ़, सफ़ा और मर्वा के चक्कर, ख़ुदा की याद और नवाफ़िल होते हैं, इसलिए इस में भी कोई हर्ज की बात नहीं।

प्रश्न : एक महिला ने विधवा के इद्दत के दौरान लजना के प्रोग्रामों में संलग्न होने, नमाज़ बाजमाअत के लिए मस्जिद में आने और अज़ीज़ों के घरों में जाने के बारे में मसाइल दरयाफ़त किए। तथा लिखा है कि बड़ी उमर की महिलाओं के लिए इद्दत की पाबंदी नहीं होनी चाहिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 2 फ़रवरी 2019 ई. में इन विषयों के बारे में निम्नलिखित मार्गदर्शन फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : विधवा की इद्दत के आदेशों में परिवर्तन के हक़ में आपने अपने

पत्र में जो तलाक़ के बाद निकाह वाली दलील (क़ुरआन-ए-करीम के अनुसार तलाक़ के बाद इद्दत पूरी होने पर पहले पति से निकाह केवल उसी सूरत में हो सकता है जब किसी दूसरे मर्द से शादी हो और फिर वह तलाक़ दे। लेकिन अब दूसरे मर्द से शादी के बग़ैर भी पहले पति से निकाह हो जाता है। अतः जिस तरह इस आदेश में नज़र-ए-सानी की गई है, इसी तरह पति की वफ़ात के बाद की इद्दत में भी महिला की उमर के लिहाज़ से नज़र-ए-सानी होनी चाहिए) दी है वह ग़लत है। न पहले ऐसा कोई आदेश था और न ही इस में कोई तबदीली हुई है। आपने अपनी कम इलमी की वजह से तलाक़ के बारे में दो अलग अलग अहकामात को मिला जुला दिया है।

इसी तरह विधवा की इद्दत के बारे में भी आप इस्लामी तालीमात से पूरी तरह अवगत नहीं हैं। इस्लाम ने महिला को अपने पति की वफ़ात पर चार माह दस दिन तक दुःख करने का आदेश दिया है और इस में किसी प्रकार की कोई छूट नहीं रखी और न ही इस आदेश में आयु की कोई रियाइत रखी है। अतः विधवा के लिए ज़रूरी है कि वह इद्दत का यह समय जहाँ तक सम्भव हो अपने घर में गुज़ारे, इस दौरान उसे बनाओ सिंघार करने, सोशल प्रोग्रामों में हिस्सा लेने और बग़ैर ज़रूरत घर से निकलने की आज्ञा नहीं।

इद्दत के समय के दौरान विधवा अपने पति की क़ब्र पर दुआ के लिए जा सकती है इस शर्त के साथ कि वह क़ब्र इसी शहर में हो जिस शहर में विधवा की रिहायश है। तथा यदि उसे डाक्टर के पास जाना पड़ता है तो यह भी मजबूरी के तहत आता है। इसी तरह यदि किसी विधवा के ख़ानदान का गुज़ारा उस की नौकरी पर हो या बच्चों को स्कूल लाने, ले जाने और ख़रीदारी के लिए उसका कोई और इंतिज़ाम नहीं तो ये सब विषय मजबूरी के तहत आएँगे। ऐसी सूरत में उसके लिए ज़रूरी है कि वह सीधी काम पर जाए और काम मुकम्मल कर के वापस घर आकर बैठे। मजबूरी और ज़रूरत के तहत घर से निकलने की बस उतनी ही हद है। किसी किस्म की सोशल मज्लिसों या प्रोग्रामों में शिरकत की उसे आज्ञा नहीं। अतः शरीयत में नई नई चीज़ें दाख़िल करने और नई नई बिद्दतें पैदा करने की किसी को आज्ञा नहीं दी गई।

प्रश्न : एक दोस्त ने इन हदीसों के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल की ख़िदमत अक़्दस में मार्गदर्शन का निवेदन किया जिन हदीसों में जंग के दौरान, आम लोगों के झगड़ों और पति पत्नी के मध्य सुलह कराने के लिए झूठ बोलने की आज्ञा दी गई है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने पत्र तिथि 28 जनवरी 2019 ई. में निम्नलिखित मार्गदर्शन फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : क़ुरआन-ए-करीम और मुस्तनद हदीसों में झूठ को أَكْبَرُ الْكَبَائِر (अर्थात बड़े बड़े गुनाहों में से बड़ा गुनाह) क़रार दिया गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस से इजतिनाब की बार-बार नसीहत फ़रमाई है।

जहां तक आपके पत्र में वर्णित रिवायत का सम्बन्ध है तो ऐसी एक रिवायत सही बुख़ारी और सही मुस्लिम में हज़रत उम्मे कुलसूम बिंत अक़बा रज़ियल्लाहु अन्हा से मर्वी है और इस रिवायत के शब्द मुहतात और काबुले तावील हैं। इसलिए इस रिवायत के शब्द ये हैं

لَيْسَ الْكَذَّابُ الَّذِي يُصْلِحُ بَيْنَ النَّاسِ وَيَقُولُ خَيْرًا وَيَنْمِي خَيْرًا۔

अर्थात जो व्यक्ति लोगों में सुलह करवाने के लिए नेक बात करे और अच्छी बात आगे पहुंचाए वह झूठा नहीं है।

इस का उदाहरण ऐसे है कि सुलह करवाने वाला व्यक्ति एक फ़रीक़ की दूसरे फ़रीक़ के बारे में कही हुई बातों में से अच्छी और नेक बातें दूसरे फ़रीक़ तक पहुंचा दे और इस फ़रीक़ के ख़िलाफ़ कही जाने वाली बातों के बारे में ख़ामोशी रहे तो ऐसा सुलह करवाने वाला झूठा नहीं कहला सकता है।

सुंन तिरमिज़ी ने हज़रत अस्मा बिंत यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से इस रिवायत को इन शब्द में वर्णन किया है

لَا يَحِلُّ الْكَذِبُ إِلَّا فِي ثَلَاثٍ يُحَدِّثُ الرَّجُلُ امْرَأَتَهُ لِيُرْضِيَهَا وَالْكَذِبُ فِي الْحَرْبِ وَالْكَذِبُ لِيُصْلِحَ بَيْنَ النَّاسِ۔

अर्थात तीन बातों के सिवा झूठ बोलना जायज़ नहीं। पति अपनी पत्नी को राज़ी करने के लिए कोई बात कहे। लड़ाई के अवसर पर झूठ बोलना और लोगों के मध्य सुलह करवाने पर झूठ बोलना।

पहली बात यह है कि सुंन तिरमेज़ी में वर्णन यह रिवायत क़ुरआन-ए-करीम के स्पष्ट आदेश और सही हदीसों में मर्वी अन्य रिवायात के ख़िलाफ़ होने की बिना पर स्वीकार करने योग्य नहीं। और दूसरी बात यह कि इस्लाम ने झूठ को किसी अवसर पर भी जायज़ क़रार नहीं दिया बल्कि इसके विपरीत यह तालीम दी कि जान भी जाती हो तो जाने दो लेकिन सच को हाथ से मत जाने दो।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस बारे में हमारा मार्गदर्शन फ़रमाया है। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपनी तसनीफ़-ए-लतीफ़ "नुरुल क़ुरआन नंबर 2" में एक ईसाई के इसी एतराज़ का उत्तर देते हुए फ़रमाते हैं :

"क़ुरआन शरीफ़ ने झूठ बोलने वाले को मूर्ति पूजा के समान ठहराया है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है

فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ... असल बात यही है कि किसी हदीस में झूठ बोलने की कदापि आज्ञा नहीं बल्कि हदीस में तो ये शब्द हैं कि ان قتلت و احرقت ... फिर यदि फ़र्ज़ के तौर पर कोई हदीस क़ुरआन और सही हदीसों की मुख़ालिफ़ हो तो वह सुनने के योग्य नहीं होगी क्योंकि हम लोग उसी हदीस को क़बूल करते हैं जो सही हदीसों और क़ुरआन-ए-करीम के मुख़ालिफ़ न हो। हाँ कुछ हदीसों में तौरिया के औचित्यपूर्ण की तरफ़ इशारा पाया जाता है। और इसी को नफ़रत दिलाने की उद्देश्य से झूठ के नाम से नामांकित किया गया है और एक जाहिल और अहमक़ जब ऐसा शब्द किसी हदीस में दुटप्पी बात के लिखा हुआ पाए तो शायद उस को वास्तविक झूठ ही समझ ले क्योंकि वह इस क़तई निर्णय से बे-ख़बर है कि हक़ीक़ी झूठ इस्लाम में पलीद और हराम और शिर्क के बराबर है परन्तु तौरिया जो वास्तव में किज़्ब नहीं जबकि किज़्ब के रंग में है मुश्किल के वक़्त लोगों के वास्ते उस का जवाज़ हदीस में पाया जाता है परन्तु फिर भी लिखा है कि सबसे बेहतर वही लोग हैं जो तौरिया से भी परहेज़ करें ... परन्तु बावस्फ़ उसके बहुत सी हदीसें दूसरी भी हैं जिनसे ज्ञात होता है कि तौरिया आला दर्जा के तक़्वा के विपरीत है और बहर हाल खुली खुली सच्चाई बेहतर है जबकि उस की वजह से क़तल किया जाए और जलाया जाए। "(नूरुल क़ुरआन नम्बर 2 रुहानी ख़ज़ायन, भाग 9 पृष्ठ 403 से 405)

अतः यह बात किसी तरह भी मानने के योग्य नहीं कि किसी हदीस में झूठ बोलने की आज्ञा दी गई है। इसलिए यदि इन हदीसों की कोई ततबीक़ हो सकती हो जो क़ुरआन और सुन्नत के अनुसार ठहरे तो इस ततबीक़ (एक चीज़ को दूसरे के मुताबिक़ करना) के साथ हम इन हदीसों को क़बूल करेंगे, अन्यथा क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की स्पष्ट तालीम के ख़िलाफ़ होने की वजह से हम इन हदीसों को स्वीकार करने योग्य नहीं ठहराते।

प्रश्न : महिलाओं के अय्याम हैज़ में (माहवारी के दिनों में) मस्जिद में आकर बैठने तथा इन दिनों में तिलावत क़ुरआन-ए-करीम करने के बारे में एक महिला की एक तजवीज़ पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने अपने तिथि 13 मार्च 2019 ई. में निम्नलिखित इर्शादात फ़रमाए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : ऊपर वर्णित दोनों विषयों के बारे में उल्मा और फ़ुक़हा की राए अलग रही हैं और बुज़्रगान-ए-दीन ने भी अपनी क़ुरआन फ़हमी और हदीस फ़हमी के अनुसार इस बारे में अलग उत्तर दिए हैं। इसी तरह जमाअती लिटरेचर में भी ख़ुलफ़ा-ए- अहमदियत के हवाले से तथा जमाअती उल्मा की तरफ़ से अलग उत्तर मौजूद हैं।

क़ुरआन-ए-करीम, और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में, महिलाओं के महवारी के दिनों में क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने के विषय में मेरा मत है कि महवारी के दिनों में महिला को क़ुरआन करीम का जो हिस्सा ज़बानी याद हो, वे उसे महावरी के दिनों में पढ़ने के तौर पर दिल में दोहरा सकती है। तथा ब-वक़्त ज़रूरत किसी साफ़ कपड़े में क़ुरआन-ए-करीम को पकड़ भी सकती है और किसी को हवाला इत्यादि बताने के लिए या बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम का कोई

हिस्सा पढ़ भी सकती है लेकिन बाक़ायदा तिलावत नहीं कर सकती।

इसी तरह उन दिनों में महिला को कम्पयूटर इत्यादि पर जिसमें उसे बज़ाहिर क़ुरआन-ए-करीम पकड़ना नहीं पड़ता बाक़ायदा तिलावत की तो आज्ञा नहीं लेकिन किसी ज़रूरत उदाहरण हवाला तलाश करने के लिए या किसी को कोई हवाला दिखाने के लिए कम्पयूटर इत्यादि पर क़ुरआन-ए-करीम से लाभ प्राप्त कर सकती है। इस में कोई हर्ज नहीं।

उन दिनों में महिला मस्जिद से कोई चीज़ लाने के लिए या मस्जिद में कोई चीज़ रखने के लिए तो मस्जिद में जा सकती है लेकिन वहां जा कर बैठ नहीं सकती। यदि उस की आज्ञा होती तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ईद में शामिल होने वाली ऐसी महिलाओं के लिए क्यों ये हिदायत फ़रमाते कि वे नमाज़ की जगह से अलग रहें। अतः इस हालत में महिलाओं को मस्जिद में बैठने की आज्ञा नहीं।

यदि कोई महिला इस हालत में मस्जिद में आती है या कोई बच्ची ऐसी हालत में अपनी माता के साथ मस्जिद आई है या अचानक किसी की ये हालत शुरू हो गई है तो उन समस्त सूरतों में ऐसी महिलाओं और बच्चियां मस्जिद की नमाज़ पढ़ने वाली जगहों में नहीं बैठ सकतीं। बल्कि किसी नमाज़ न पढ़ने वाली जगह पर उनके बैठने का इंतिज़ाम किया जाए।

प्रश्न : हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल के साथ नैशनल आमिला लजना इमाइल्लाह की virtual मुलाक़ात तिथि 16 अगस्त 2020 ई. में तर्बीयत के अलग पहलूओं के हवाले से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने मैंबरान आमेला को तवज्जा दिलाते हुए निम्नलिखित हिदायात दीं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :

उत्तर : माताओं के माध्यम से तर्बीयत करें कि जो आजकल की यहां बच्चियां पढ़ रही हैं उनके साथ उनके सम्बन्ध दोस्ताना होने चाहिएं और उनका यहां जो बाहर निकल के, यूनीवर्सिटीज़ में जा के, कालेजज़ में के exposure है इसके साथ यदि माएं पूरी तरह तालीम-ए-याफ़ता नहीं हैं तो फिर वे आप लोगों से सहायता लें। लेकिन इसके अतिरिक्त लड़कियों के साथ सम्पर्क रखें। और लड़कियों की तर्बीयत ये करें कि वे जैसी मर्ज़ी तालीम हासिल करें लेकिन जो दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देने का समय है, उसको सामने रखें कि वे क्या हैं? केवल दुनिया में ही न पड़ जाएं। यहां उनको यह भी realize करवाना चाहिए कि यहां आ के अल्लाह तआला ने जो दुनियावी लिहाज़ से फ़ज़ल किए हैं इन दुनियावी फ़ज़लों पर अल्लाह तआला के शुक्राने का सही प्रकटन यह है कि ज़्यादा से ज़्यादा दीन से attach हुआ जाए। यह अक्सर लड़कों में भी होता है इसलिए फिर माओं की तर्बीयत इस लिहाज़ से भी करने की ज़रूरत है कि पंद्रह वर्ष तक या कम से कम तेराह चौदह वर्ष तक लड़के भी माओं ही के माध्यम से प्रभावित होते हैं (इसलिए माएं लड़कों की भी इस हवाले से तर्बीयत करें) फिर माओं की तर्बीयत की इसलिए भी ज़रूरत है कि ये जो मर्दों की तर्बीयत की ज़िम्मेदारी है ये भी आप लोगों ने ही करनी है। मर्दों में भी तर्बीयत में कमी है। मैं ये नहीं कहता कि वे जैसा मर्ज़ी काम करते रहें और महिलाएं अपनी ज़िम्मेदारियाँ सम्भालें। उनकी भी ज़िम्मेदारी है। लेकिन आप लोगों ने तर्बीयत के लिहाज़ से इस चैलेंज को भी लेना है कि लड़कों में, छोटी उमर के अतफ़ाल जो हैं उनकी भी तर्बीयत ऐसे करें कि जब वे ख़ुद्दाम में संलग्न हों तो वहां से attach हों। इसी तरह बच्चियां जब नास्रात से लजना में आएं तो वे जमाअत से attach हों। यहां के माहौल का जो असर है, क्योंकि खुली तालीम दी जाती है और कुछ खुले प्रश्न किए जाते हैं। इस पर आप लोगों ने उनको खुल के उत्तर देने हैं। इस का तरीक़ा यही है कि आप एक survey करें और एक प्रश्नावलीपत्र बना कर भेजें। हर मज्लिस में जाए। और लड़कियों को कहें कि बेशक अपना नाम न लिखो और तुम्हारे ज़हन में किसी भी किस्म के जो प्रश्न दीन के बारे में हैं या दुनिया के बारे में हैं और दीन और दुनिया के अंतर के बारे में हैं या कुछ शुबहात हैं, वे बेशक ज़ाहिर कर दो। फिर लजना के level पर अलग forums पर उनके उत्तर देने की कोशिश करें। और यहां मुझे भेजें। यहां भी हम कोई प्रोग्राम बना सकते हैं। एम.टी.ए में भी इस के उत्तर दे सकते हैं। फिर आपके वहां एम.टी.ए स्टूडियो बन चुका है, वहां आप लोग एम.टी.ए के साथ coordinate कर के एक प्रोग्राम बना सकते हैं। और लजना एक प्रोग्राम बनाए और बग़ैर नाम लिए इन प्रश्नों के उत्तर दे कि आजकल ये ये issue उठते हैं या ये ये प्रश्न दुनिया में पैदा हो रहे हैं। उसकी वजह से हमारी कुछ बच्चियों के ज़हन भी pollute हो रहे हैं। उनके ज़हनों को हमने किस तरह साफ़ करना है। तो इस तरह के कुछ प्रश्न हैं कि आप खुल के एम.टी.ए पर discuss कर सकते हैं और कुछ हैं जो नहीं कर सकते, उनको personal level पर जा के उनके उत्तर देने पड़ेंगे। फिर कुछ बग़ैर नामों के प्रश्न आएँगे तो उनको इंटरनैट पर इस तरह रखें, कोई ऐसा forum बनाएँ जहां तर्बीयत के लिए ऐसे प्रश्नों के उत्तर दिए जा सकें। तो आजकल इस ज़माना में ये बहुत बड़े चैलेंजेज़ हैं जो मीडीया ने, लोगों ने शुबहात पैदा करने के लिए डाल दिए हैं। फिर so-called तालीम के नाम पर अपने आपको ज़्यादा ही पढ़ी लिखी समझ के समझती हैं कि शायद इस्लाम की तालीम बड़ी backwards तालीम है। हालाँकि इस्लाम की तालीम से ज़्यादा इस ज़माना में किसी भी धर्म की कोई तालीम ऐसी नहीं हैं जो माडर्न हो और जो ज़माना के हिसाब से अपने आपको adjust करने वाली हो।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी.ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल् फ़ज़ल इंटरनैशनल 5 मार्च 2021 ई.)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ02 का शेष

आरंभ में तो मानों यूं लगता था कि अंसार किसी तौर से भी मुहाजिरीन में से किसी को अपना अमीर या ख़लीफ़ा स्वीकार करने को तैयार नहीं होंगे और मुहाजेरीन अंसार में से किसी को ख़लीफ़ा बनाने पर तैयार नहीं होंगे। और क़रीब था कि वीवाद भाषणों से बढ़कर बात तलवारों तक जा पहुँचती कि इस नाज़ुक अवसर पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की भाषा में अल्लाह तआला ने वह प्रभाव पैदा किया और दूसरी तरफ़ लोगों के दिलों को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मायल किया कि ये सारा इंतिशार और मतभेद एक-बार फिर मुहब्बत और इत्तिहाद में परिवर्तित हो गया।

जैसा कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "और जिस तरह बनी इसराईल हज़रत-ए-मूसा की वफ़ात के बाद यूशा बिन नून की बातों के सुननेवाले हो गए और कोई मतभेद न किया और सबने अपनी इताअत ज़ाहिर की यही वाक़िया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को पेश आया और सब ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जुदाई में आँसू बहा कर हृदय के प्रेम से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त को स्वीकार किया।" (तोहफ़ा गोलड़विया, रुहानी ख़ज़ायन, बहग 17 पृष्ठ 186)

तीसरी अहम बात, और ऐसा फ़िक्रा जिसको सँभालना बड़ा ज़रूरी था। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस को किस तरह सरअंजाम दिया और वह बात थी लश्कर उसामा की रवानगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह लश्कर शाम की सरहद पर रोमीयों से जंग के लिए तैयार किया था। मौता की जंग और ग़ज़वा-ए-तबूक के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संदेह पैदा हुआ कि कहीं इस्लाम और मसीहीयत के बढ़ते हुए मतभेद और यहूद की फ़िक्रा-अंगेज़ी के बाइस अहल रुम अरब पर हमला न कर दें।

जंग मौअता में हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बिन रुवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु और मुसलमानों के तीन अमीर एक के बाद एक शहीद हुए। मौअत अरदन के मशरिक़ में एक उपजाऊ ज़मीन में वाक़्य एक शहर है।

(अबू बकर सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति पृष्ठ 123 मकतबा जदीद लाहौर)(उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामीया, भाग 21 पृष्ठ 731 ज़ेर लफ़्ज़ मता)

बहरहाल इस बारे में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों को हज़रत ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु , हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु की मौत की ख़बर दी पूर्व इस के कि लोगों के पास इस से सम्बन्धित कोई ख़बर आई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ज़ैद ने झंडा लिया और वो शहीद हुआ। फिर जाफ़र ने पकड़ा और वे भी शहीद हो गया। फिर इब्ने रवाह ने झंडे को पकड़ा और वे भी शहीद हो गए। और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आँखें आँसू बहा रही थीं। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आख़िर अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार अर्थात ख़ालिद बिन वलीद ने झंडा लिया यहां तक कि अल्लाह ने उसे इन मुख़ालिफ़ीन पर फ़तह दी। (सही अल् बुख़ारी, किताब अल् मनाकिब, बाब मनाक़िब ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीसा 3757)

इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं मुस्लमानों को हमराह लेकर तबूक की ओर रवाना हुए लेकिन दुश्मन को मैदान में निकल कर मुस्लमानों का मुक़ाबला करने का साहस नहीं हुआ और उसने शाम के अंदरूनी इलाक़ों में घुस कर मुस्लमानों के हमलों से महफ़ूज़ होने में अपनी ख़ैरीयत समझी। इन ग़ज़वात के बायस मुस्लमानों के सम्बन्ध में रोमीयों के इरादे बहुत ख़तरनाक हो गए और उन्होंने अरब की सरहद पर पेशक़दमी करने की तैयारीयां शुरू कर दीं। इसी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसामा को बतौर पेशबंदी शाम रवाना होने का हुक्म दिया था।

(अबू बकर सिद्दीक़ अकबर अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपति, पृष्ठ 124 मकतबा जदीद लाहौर)

और एक उद्देश्य मौअता की जंग शहीदों का बदला लेना भी था। लश्कर उसामा की तैयारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से दो दिन पूर्व शनिवार के दिन पूर्ण हुआ और इसका आरम्भ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीमारी से पूर्व हो चुका था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़र के महीने के आख़िर में रोमीयों से जंग की तैयारी का हुक्म दिया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया अपने पिता की शहादत गाह की तरफ़ रवाना हो जाओ और उन्हें घोड़ों से रौंद डालो। मैं ने तुमको इस लश्कर का अमीर निर्धारित किया है।

(फ़तह अलबारी लाबन हिज्र,भाग 8 पृष्ठ 192 क़दीमी कुतुब ख़ाना मुक़ाबिल आराम बाग़ कराची)

एक और रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बलका और दारुम्म को घोड़ों के माध्यम से रौंद डालो। अर्थात ये लोग ऐसे हैं जो जंग करना चाहते हैं उनसे अच्छी तरह जंग करो। बलका शाम में वाक़्य एक इलाक़ा है जो दमिशक़ और कुरा की वादी के मध्य है। दारूम के बारे में यह परिचय लिखा है कि मिस्र जाते हुए फ़लस्तीन में गज़्ज़ा के बाद एक स्थान है।

(तारीख़ तबरी, भाग 2 पृष्ठ 224 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 579 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 119 जवार अकैडमी पब्लिकेशन कराची 2003 ई.)

बहरहाल मुल्क-ए-शाम के लिए रवानगी का इरशाद करते हुए आपने फ़रमाया। सुबह होते ही उबना वालों पर हमला करो। उबना भी मुल्क-ए-शाम में बलका की ओर एक जगह का नाम है और तेज़ी के साथ सफ़र करो ताकि उन तक इत्तिला पहुंचने से पहले पहुंच जाओ। अतः अगर अल्लाह तआला तुम्हें कामयाबी अता करे तो वहां क़ियाम मुख़्तसर रखना और अपने साथ रास्ता दिखाने वाले ले जाना और मुख़बिरों और जासूसों को अपने आगे रवाना कर दो। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए अपने हाथ से एक झंडा बाँधा। कहा : अल्लाह के नाम के साथ उसकी राह में जिहाद करो और उस से जंग करो जिसने अल्लाह का इंकार किया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु यह अर्थात आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ से बंधा हुआ झंडा लेकर निकले और उसे हज़रत बुरेयदा बिन हुसेब के सपुर्द किया और जुर्फ़ के स्थान पर लश्कर को जमा किया। जुर्फ़ भी मदीना से तीन मील शुमाल की जानिब एक जगह है। बहरहाल मुहाजेरीन और अंसार के सम्मानीय लोगों में से कोई व्यक्ति भी बाक़ी नहीं बच्चा परन्तु उस को इस जंग के लिए बुला लिया गया। उनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत कतादा बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सलमा बिन असलम रज़ियल्लाहु अन्हु ये सब भी शामिल थे। कुछ लोगों ने बातें शुरू कर दीं और कहा यह लड़का अव्वलीन मुहाजेरीन पर अमीर बनाया जा रहा है। इस बात पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख़्त नाराज़ हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने सिर को एक रूमाल से बाँधा हुआ था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक चादर ओढ़े हुए थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मंच पर चढ़े और अल्लाह की हमद प्रशंसा वर्णन की। फिर फ़रमाया हे लोगो! तुम में से कुछ की गुफ़्तगु उसामा को अमीर बनाने के सम्बन्धित में मुझे पहुंची है। अगर मेरे उसामा को अमीर बनाने पर तुमने एतराज़ किया है तो इस से पहले उस के बाप को मेरे अमीर निर्धारित करने पर भी तुम एतराज़ कर चुके हो। ख़ुदा की क़सम वह इमारत के योग्य था और इसके बाद उस का बेटा भी इमारत के योग्य है वह उन लोगों में से था जो मुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं और निसंदेह दोनों ऐसे हैं कि उनके बारे में हर किस्म की नेकी और भलाई का ख़्याल किया जा सकता है।

अतः उसामा के लिए ख़ैर की नसीहत पकड़ो क्योंकि यह तुम में से बेहतरीन लोगों में से है। ये 10 रबीउल अव्वल और हफ़्ते का दिन था अर्थात आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से दो दिन पूर्व की बात है। वे मुस्लमान जो हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ रवाना हो रहे थे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को विदा कर के जुर्फ़ के स्थान पर लश्कर में शामिल होने के लिए चले गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीमारी बढ़ गई लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ताकीद फ़रमाते रहे कि लश्कर-ए-उसामा को भेजो। इतवार के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दर्द और ज़्यादा हो गया। हज़रत उसामा लश्कर में से वापस आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेहोशी की हालत में थे। इस दिन लोगों ने आपको दवा पिलाई थी। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिर झुका कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बोसा दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बोल नहीं सकते थे लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठाते और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर पर रख देते। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने समझ लिया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मेरे लिए दुआ कर रहे हैं। हज़रत उसामा लश्कर की तरफ़ वापस आ गए। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु सोमवार को दुबारा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अवस्था में सुधार हो गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसामा से फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बरकत से रवाना हो जाओ।

हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विदा हो कर अपने लश्कर की तरफ़ रवाना हुए और लोगों को चलने का हुक्म दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अभी रवानगी का इरादा ही किया था कि उनकी माता हज़रत उम्मे यमन रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ से एक व्यक्ति यह पैग़ाम लेकर आया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आख़िरी वक़्त दिखाई दे रहा है। इस पर हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू उबेदा रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनके साथ थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर प्राणांत होने की दशा थी। 12 रबीउल अव्वल को सोमवार के दिन सूरज ढलने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई जिसकी वजह से मुस्लमानों का लश्कर जुर्फ़ स्थान से मदीना वापस आ गया और हज़रत बुरेदा बिन हुसेब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु का झंडा लेकर आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दरवाज़े पर गाड़ दिया। एक रिवायत के अनुसार जब हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर ज़ी ख़ुशुब में था तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई। यह ज़ी ख़ुशुब मदीना से शाम के रास्ते पर एक वादी का नाम है। बहरहाल जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली गई तो हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत बुरेदा बिन हुसेब रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया कि झंडा लेकर उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के घर जाओ कि वह अपने उद्देश्य के लिए रवाना हों। हज़रत बुरेदा रज़ियल्लाहु अन्हु झंडे को लश्कर की पहली जगह पर ले आए।

(अल् तब्क़ातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 146-147 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)(अल् बिदाया वन्हाया, भाग 3 भाग 6 पृष्ठ 302 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)(मोअज्जमुल बुल्दान, भाग 1, पृष्ठ 101 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 114,87 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची 2003 ई.)

इस लश्कर की संख्या तीन हज़ार वर्णन की जाती है।

(शरह अल् ज़र्कानी अला मवाहिबुल दुनिया, भाग 4 पृष्ठ 155 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

और एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु को सात सौ आदमियों के साथ शाम की तरफ़ भेजा गया। एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दूसरे दिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने घोषणा करा दी कि उसामा की मुहिम पाया-ए-तकमील को पहुँचेगी। उसामा के लश्कर में से कोई व्यक्ति भी मदीना में बाक़ी न रहे परन्तु यह कि वे सब जुर्फ़ उनके लश्कर से जा मिलें।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद समस्त अरब में ख़ाह कोई आम था या ख़ास तक़रीबन हर क़बीला में इस्लाम से पीछे हटने का उपद्रव फैल चुका था और उनमें दोग़ला पन प्रकट हो गया था और इस वक़्त यहूद और नसारा ने अपनी गर्दनें उठा उठा कर देखना शुरू कर दिया था और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात और मुस्लमानों की कम संख्या और दुश्मन की कसरत के बायस उनकी हालत बारिश वाली रेत में भीड़ बकरियों की भांति थी अर्थात इस तरह थे कि बिल्कुल बेयार-ओ-मददगार थे इस पर लोगों ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ये लोग केवल उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को ही मुस्लमानों का लश्कर समझते हैं और जैसा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु देख रहे हैं अरबों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से बग़ावत कर दी है। अतः मुनासिब नहीं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मसलमानों की इस जमाअत को अपने से अलग कर लें अर्थात उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर को भेजें। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : क़सम है इस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर मुझे यक़ीन हो कि दरिंदे मुझे नोच खाएँगे तो भी मैं उसामा के लश्कर के बारे में रसूलुल्लाह के जारी फ़र्मूदा फ़ैसले को नाफ़िज़ कर के रहूँगा।

एक और रिवायत में आता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई माबूद नहीं अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों के पांव कुत्ते घसीटते फिरें। मैं फिर भी इस लश्कर को जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा है वापस नहीं बुलाऊँगा और न मैं इस झंडे को खोलूँगा जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाँधा है। (अल् बिदाया वन्नहाया भाग 3 भाग 6 पृष्ठ 302 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)(तारीख़ अल तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 244 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)(अल् कामिल फ़िल तारीख़, बहग 2 पृष्ठ 199 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में वर्णन फ़रमाते हैं कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए तो सारा अरब मुर्तद हो गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बहादुर इन्सान भी इस फ़ित्ना को देखकर घबरा गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात के क़रीब एक लश्कर रूमी इलाक़ा पर हमला करने के लिए तैयार किया था और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को इस का अफ़्सर निर्धारित किया था। ये लश्कर अभी रवाना नहीं हुआ था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफ़ात पा गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर जब अरब मुर्तद हो गया तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा कि अगर ऐसी बग़ावत के वक़्त उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर अभी रूमी इलाक़ा पर हमला करने के लिए भेज दिया गया तो पीछे केवल बूढ़े मर्द और बच्चे और औरतें रह जाएं गी और मदीना की हिफ़ाज़त का कोई सामान नहीं रहेगा। इस लिए उन्होंने तजवीज़ की कि बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का एक वफ़द हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में जाए और उन से निवेदन करे कि वे इस लश्कर को बग़ावत के दूर करने तक रोक लें। इस लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और दूसरे बड़े बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने यह निवेदन पेश किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह बात सुनी तो उन्होंने निहायत गुस्से से इस वफ़द को यह उत्तर दिया कि क्या तुम ये चाहते हो कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अबू कहाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम ये करे कि जिस लश्कर को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रवाना करने का हुक्म दिया था उसे रोक ले?

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! अगर दुश्मन की फ़ौजें मदीना में घुस आएं और कुत्ते मुस्लमान औरतों की लाशें घसीटते फिरें तब भी में इस लश्कर को नहीं रोकूँगा जिसको रवाना करने का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़ैसला फ़रमाया था। यह साहस और दिलेरी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु में ईसी वजह से पैदा हुई कि ख़ुदा ने यह फ़रमाया कि مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ जिस तरह बिजली के साथ मामूली तार भी मिल जाएँ तो इस में अज़ीमुश्शान ताक़त पैदा हो जाती है इसी तरह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेम के नतीजा में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मानने वाले भी اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ के गवाह हो गए।" (सैर-ए- रूहानी 6) अनवारुल उलूम, भाग 22 पृष्ठ 593-594)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जैश-ए-उसामा की रवानगी के विषय में अपनी तसनीफ़ सिर्रुल खिलाफ़ा में वर्णन फ़रमाते हैं कि "इब्न-ए-असीर ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात की ख़बर मक्का और वहां के गवर्नर अत्ताब बिन आसीद को पहुंची तो अत्ताब छिप गया और मक्का लरज़ उठा और क़रीब था कि उसके रहने वाले मुर्तद हो जाते और मज़ीद लिखा है कि अरब मुर्तद हो गए। "हर क़बीला में से ख़्वास-ओ-'अवाम। और दोगलापन ज़ाहिर हो गया और यहूदियों और ईसाइयों ने अपनी गर्दनें उठा उठा कर देखना शुरू कर दिया और मुस्लमानों की अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की वजह से, तथा अपनी क़िल्लत और दुश्मनों की कसरत की वजह से ऐसी हालत हो गई थी जैसी बारिश वाली रात में भीड़ बकरियों की होती है इस पर लोगों ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ये लोग केवल उसामा के लश्कर को ही मुस्लमानों का लश्कर समझते हैं और जैसा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु देख रहे हैं अरबों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से बग़ावत कर दी है। अतः मुनासिब नहीं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मसलमानों की इस जमाअत को अपने से अलग कर लें। इस पर (हज़रत) अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़बज़ा क़ुदरत में मेरी जान है अगर मुझे इस बात का यक़ीन भी हो जाए कि दरिंदे मुझे उचक लेंगे तब भी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के अनुसार उसामा के लश्कर को ज़रूर भेजूँगा। जो फ़ैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है मैं उसे निरस्त नहीं कर सकता।" (उर्दू अनुवाद सिर्रुल खिलाफ़ा, पृष्ठ 188-189 हाशिया प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वाह)

अल्ग़र्ज़ आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म को कमा हुक़्क़ा क़ायम रखा और नाफ़िज़ फ़रमाया और जो सहाबा हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में शामिल थे उन्हें वापस लश्कर में शामिल होने का इरशाद फ़रमाया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हर वह व्यक्ति जो

पहले उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में शामिल था और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में शामिल होने का इरशाद फ़रमाया था वह कदापि पीछे नहीं रहे और न ही मैं उसे पीछे रहने की इजाज़त दूँगा। उसे ख़ाह पैदल भी जाना पड़े वे ज़रूर साथ जाएगा। तो एक भी इस से पीछे न रहा।

(शरह अल् ज़र्कानी अल मवाहिबुल दुनिया, भाग 4 पृष्ठ 155 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1996 ई.)

बहरहाल लश्कर एक-बार फिर तैयार हो गया। कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हालात की नज़ाकत के बायस फिर मश्वरा दिया कि फ़िलहाल इस लश्कर को रोक लिया जाए। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास जा कर उनसे कहें कि वे लश्कर की रवानगी का हुक्म निरस्त कर दें ताकि हम मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ लड़ने को तैयार हों और ख़लीफ़-ए-रसूल और हरम-ए-रसूल और मुस्लमानों को मुशरिकीन के हमलों से सुरक्षित रखें। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में शामिल कुछ अंसार ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह भी कहा कि ख़लीफ़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अगर लश्कर को रवाना करने पर ही डटे हों तो उन्हें हमारी तरफ़ से यह संदेश दें और यह मांग करें कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को लश्कर का सरदार निर्धारित कर दें जो आयु में उसामा से बड़ा हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्हें बताया जो हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि अगर कुत्ते और भेड़ीए भी मुझे नोच कर खाएं तो मैं इसी तरह इस फ़ैसले को नाफ़िज़ करूँगा जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म फ़रमाया था और मैं इस फ़ैसले को तबदील नहीं करूँगा जो फ़ैसला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। अगर इन बस्तियों में मेरे सिवा कोई एक भी बाक़ी न बचा तब भी मैं इस फ़ैसले को नाफ़िज़ कर के रहूँगा। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अंसार किसी ऐसे व्यक्ति को अमीर के तौर पर चाहते हैं जो उसामा से उम्र में बड़ा हो। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जो बैठे हुए थे खड़े हुए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की दाढ़ी से पकड़ा और कहा हे इब्ने खत्ताब! तेरी माँ तुझे खोए! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अमीर निर्धारित किया है और तुम मुझे कहते हो कि मैं उसे इमारत से हटा दूं।

(उद्धरित अल् कामिल फ़ील-तारीख़, बहग 2 पृष्ठ 199-200 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों की तरफ़ वापस पहुंचे तो लोगों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि क्या बना? तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा चले जाओ। तुम्हारी माएं तुम्हें खोएं। अर्थात उनको बुरा-भला कहा। नापसंदीदगी का इज़हार किया कि आज तुम्हारी वजह से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा की तरफ़ से मुझे कोई भलाई नहीं मिली।(उद्धरित तारीख़ अल तिब्री ले अबी जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर भाग 2, पृष्ठ 246 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)(उद्धरित अल् सीरतुल हल्बिया, भाग 3 पृष्ठ 293 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई). अर्थात उन्होंने मेरी बातों का बहुत बुरा मनाया।

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के अनुसार जैश-ए-उसामा जुर्फ़ के मुक़ाम पर इकट्ठा हो गया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां ख़ुद तशरीफ़ ले गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां जा कर लश्कर का जायज़ा लिया और उस को तर्तीब दिया।

रवानगी के वक़्त का दृश्य भी बहुत हैरत-अंगेज़ था। इस वक़्त हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु सवार थे जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पैदल चल रहे थे। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा या तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु सवार हो जाएं या फिर मैं भी नीचे उतरता हूँ। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। ख़ुदा की कसम न ही तुम नीचे उतरोगे और न ही मैं सवार हूँगा और मुझे क्या है कि मैं अपने दोनों पैर अल्लाह की राह में एक घड़ी के लिए गर्द-आलूद न कर लूं क्योंकि ग़ज़वा में शामिल होने वाला जब कोई क़दम उठाता है तो उस के लिए उसके बदले में सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और उस को सात सौ दर्जे बुलंदी दी जाती है और इस की सात सौ बुराईयां ख़त्म की जाती हैं।

(उद्धरित अल् कामिल फ़ी तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 200 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा अगर आप मुनासिब समझें तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मेरे कामों में सहयोग के लिए छोड़ दें तो हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आज्ञा दे दी।

तारीख़ अल तिब्री लॉबी जाफ़र मुहम्मद बिन जरीर तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 246 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत, 2012 ई.)

इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब भी हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलते यहां तक कि ख़लीफ़ा मुंतख़ब होने के बाद भी तो आपको सम्बोधित करके कहते कि اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا الْأَمِيْرُ۔ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु क्योंकि क़ाफ़िले में शामिल थे इसलिए उस वक़्त उनके अमीर थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह कहा करते थे कि हे अमीर! अस्सलामो अलैकुम। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु जवाब दिया करते थे कि غَفَرَ اللهُ لَكَ يَا أَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْن कि हे अमीरुल मौमेनीन अल्लाह तआला आप रज़ियल्लाहु अन्हु से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए।

(सीरतुल हल्बिया, भाग 3 पृष्ठ 294 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

बहरहाल आगे वर्णन है कि सबसे आख़िर पर लश्कर को ख़िताब फ़रमाते हुए हज़रत अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तुमको दस बातों की नसीहत करता हूँ : तुम ख़ियानत न करना, और माल-ए-ग़नीमत से चोरी न करना, तुम वादा न तोड़ना, और अंग न काटना अर्थात किसी के नाक कान न काटना आँखें न निकालना चेहरा न बिगाड़ना, और किसी छोटे बच्चे को क़तल न करना और न किसी बूढ़े को और न ही किसी औरत को, और न खजूर के दरख़्त को काटना और न उस को जलाना, और न किसी फलदार दरख़्त को काटना, न तुम किसी बकरी गाय और ऊंट को ज़बह करना सिवाए खाने के लिए, और तुम कुछ ऐसे लोगों के पास से गुज़रोगे जिन्हों ने अपने आपको गिरजों में वक़्फ़ कर रखा है अतः तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ देना अर्थात राहिब, ईसाई पादरी, जितने हैं उनको कुछ नहीं कहना, और तुम ऐसे लोगों के पास जाओगे जो तुम्हें मुख़्तलिफ़ किस्म के खाने बर्तनों में प्रस्तुत करेंगे तुम उन पर अल्लाह का नाम लेकर खाना। ये नहीं कि अगर उन्होंने खाना पेश किया तो न खाओ कि हराम है, बिसमिल्लाह पढ़के खा लेना, और तुम्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो अपने सिर के बाल मध्य से साफ़ किए होंगे और चारों तरफ़ पट्टीयों की मानिंद बाल छोड़े होंगे तो तलवार से उनकी ख़बर लेना। ये लोग जो हैं उनके बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं। यह आता है कि ईसाइयों का एक गिरोह ऐसा था जो राहिब तो नहीं थे लेकिन मज़हबी लीडर होते थे और वे मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग के लिए भड़काते रहते थे और जंग में हिस्सा भी लेते थे। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये तो फ़रमाया कि जो राहिब हैं गिरजों के अंदर हैं उनको कुछ नहीं कहना, उनसे नहीं लड़ना लेकिन ऐसे लोग और उन लोगों के पीछे चलने वाले जो लोग हैं उनसे बहरहाल जंग करनी है क्योंकि ये लोग जंग करने वाले भी हैं और जंग के लिए भड़काने वाले भी हैं। फ़रमाया कि अल्लाह के नाम से रवाना हो जाओ। अल्लाह तुम्हें हर किस्म के ज़ख़म से और हर किस्म की बीमारी और ताऊन से महफ़ूज़ रखे। (उद्धरित तारीख़ अल तिब्री ले अबी जाफ़र मुहम्मद बिन तबरी, भाग 2 पृष्ठ 246 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2012 ई.)

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसामा से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो तुम्हें करने का हुक्म दिया था वे सब कुछ करना। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहकाम की बजा आवरी में किसी किस्म की कोताही नहीं करना।

(उद्धरित तारीख़ अल तिब्री ले अबी जाफ़र मुहम्मद बिन तबरी, बहग 2 पृष्ठ 246 दारुल क़ुतुब इल्मिया, बेरूत 2012 ई.)

इस के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को साथ लेकर मदीना तशरीफ़ ले आए।

(सीरत सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु, अनुवादक लेखक अबू नसर, पृष्ठ 561)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसामा बिन ज़ैद के लश्कर को रबी उलअव्वल 11 हिज्री के आख़िर में रवाना फ़रमाया।

(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 3, हिस्सा 6 पृष्ठ 302 सन 11 हिज्री, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

और एक रिवायत के अनुसार उन्हें यक्म रबी अल् सानी ग्यारह हिज्री को रवाना फ़रमाया।

(उद्धरित अल् तब्क़ातु कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 147 सरिया उसामा बिन ज़ेद

रज़ियल्लाहु अन्हु मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु बीस रातों का सफ़र तै कर के उबना स्थान के पास पहुंचे और उन पर अचानक हमला कर दिया और मुस्लमानों का शआर یُ مَنْصُوْرُ اَمِتْ था। अर्थात हे मंसूर! मार दो। अर्थात जो भी मुक़ाबला करने आया है उसे मॉरो। जो उन के सामने आया उसे क़तल कर दिया और जिस पर क़ाबू पा लिया उसे क़ैदी बना लिया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके मैदानों में अपने घुड़सवारों को गशत कराया। इस दिन जो कुछ उन्हें माल-ए-ग़नीमत मिला उसे सँभालने में व्यस्त रहे। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने पिता के सबह नामी घोड़े पर सवार थे और उन्होंने हमला कर के अपने पिता के क़ातिल को भी क़तल कर दिया। जब शाम हो गई तो हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को चलने का हुक्म दिया और अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु नौ रातों में वादी अल् कुरा पहुंच गए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुशख़बरी देने वालों को मदीना रवाना किया कि वे लश्कर की सलामती की ख़बर दे। इसके बाद उन्होंने रवानगी का क़सद किया और छः रातों में मदीना पहुंच गए। इस मार्का में मुस्लमानों का कोई आदमी भी शहीद नहीं हुआ। जब यह कामयाब और फ़ातेह लश्कर मदीना पहुंचा तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मुहाजेरीन और अहल-ए-मदीना के साथ लश्कर की सलामती पर ख़ुश होते हुए उनको मिलने के लिए बाहर निकले। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने पिता के घोड़े पर सवार हो कर दाख़िल हुए और हज़रत बुरीदा बिन हुसेब रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु के आगे झंडा उठाए हुए थे यहां तक कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहुंचे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मस्जिद में दाख़िल हो कर दो रकात पढ़ीं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु आपने घर गए।

(अल् तब्कातुल कुबरा, भाग 2 पृष्ठ 147 सरिया उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

अलग अलग रिवायत के अनुसार यह लश्कर चालीस से लेकर सत्तर रोज़ तक बाहर रहने के बाद मदीना वापस पहुंचा था।

(अल् कामिल फ़ील-तारीख़, भाग 2 पृष्ठ 200 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2006 ई.)

लिखा है कि ग़ालिबन यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुहब्बत का कारण था कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस झंडे को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपने हाथ से गिरह लगाई थी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि ये कैसे हो सकता है कि इब्न-ए-अबू कुहाफ़ा इस झंडे की गिरह खोल दे जो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद अपने हाथ से लगाई है। इस लिए लश्कर उसामा की वापसी पर इस झंडे की गिरह न खोली गई और वह झंडा बाद में भी हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में ही रहा यहां तक कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हो गई। (المسيرة الاسلاميه لجيل الخلافة الراشدة تاليف منير محمد الغضبان पृष्ठ 34-35 दारुस सलाम 2015 ई.)

लश्कर उसामा के असरात के बारे में लिखा है कि इस लश्कर के बहुत ही अहम और दूर रस असरात ज़ाहिर हुए एक तो यह कि वह सब लोग जो कि पहले बहुत शिद्दत से क़ायल थे कि हालात का तक़ाज़ा है कि लश्कर-ए-उसामा को अभी नहीं भेजना चाहिए वे जान गए कि ख़लीफ़ा का फ़ैसला कितना बरवक़्त और मुफ़ीद था और वे जान गए कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत ही अमीक़ नज़र और विवेक वाले थे ; नंबर 2 यह कि इस लश्कर की रवानगी से पूर्व क़बायल अरब में मुस्लमानों की धाक बैठ गई और

वे सोचने लगे कि अगर मुस्लमानों के पास क़ुव्वत नहीं होती तो यह लश्कर रवाना न करते। इस का उन पर काफ़ी रोब पड़ा ; तीसरी बात यह कि अरब की सरहदों पर नज़रें लगाए ग़ैर मुल्की क़ुव्वतें खासतौर पर रोमीयों पर मुस्लमानों का रोब तारी हो गया। रूमी कहने लगे यह कैसे लोग हैं कि एक तरफ़ तो उनका नबी फ़ौत हो रहा है और फिर भी ये हमारे मुल्क पर हमला-आवर हो रहे हैं।

(स्यादना अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ सलाबी पृष्ठ 268-258)

मशहूर बर्तानवी माहिर-ए-तालीम और मुस्तश्रिक़ सर थॉमस वॉकर आरनल्ड (thomas walker arnold) लश्कर-ए-उसामा के बारे में लिखता है :

[after the death of muhammad, the army he had intended for syria was despatched thither by Abū bakr, in spite of the protestations made by certain muslims in view of the then disturbed state of arabia. He silenced their expostulations with the words: "I will not revoke any order given by the prophet. medina may become the prey of wild beasts, but the army must carry out the wishes of muhammad." this was the first of that wonderful series of campaigns in which the arabs overran syria, persia and northern africa—overturning the ancient kingdom of persia and despoiling the roman empire of some of its fairest provinces.]

(the preaching of islam By t.w. arnold. chapter iii. page 41.

london constable and company ltd. 1913)

इस का अनुवाद यह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अबू बकर ने लश्कर उसामा को रवाना किया जिसे शाम की तरफ़ भेजने का नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने निर्णय कर रखा था। बावजूद इसके कि अरब में बेचैनी की कैफ़ीयत के पेश-ए-नज़र कुछ मुस्लमानों ने इस से मतभेद किया लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी अस्वीकृति को अपने इस कथन के द्वारा से ख़ामोश कर दिया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से दिए गए किसी हुक्म को निरस्त नहीं करूँगा ख़ाह मदीना जंगली दरिंदों का शिकार बन जाए फिर भी यह लश्कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ाहिशात की ज़रूर तकमील करेगा। ये उन शानदार मुहिम्मात में से पहली मुहिम थी जिसके द्वारा से अरब शाम, ईरान और शुमाली अफ़्रीक़ा पर क़ाबिज़ हुए और क़दीम फ़ारसी सलतनत को ख़त्म किया और रूमी सलतनत के पंजे से इस के बेहतरीन सूबों को आज़ाद करा लिया।

इसी तरह एक और जगह इस का वर्णन इन्साईक्लो पीडीया आफ़ इस्लाम में हज़रत उसामा के ज़ेल में इस तरह लिखा है

The newly-elected caliph Abu bakr ordered the expedition to be resumed, in accordance with the prophet's wishes, though the tribes were already in revolt. usama reached the region of al-balka in syria, where zayd had fallen, and raided the village of ubna.....his victory brought joy to medina, depressed by news of the ridda, thus acquiring an importance out of proportion to its real significance, which caused it later to be regarded as the beginning

of a campaign for the conquest of syria.

(the encyclopaedia of islam vol. 10 page 913 under usama printed by leiden brill 2000)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

कि नए मुंतख़ब होने वाले ख़लीफ़ा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुक्म दिया कि उसामा का लश्कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ाहिशात की तकमील के लिए बदस्तूर जाएगा जबकि क़बायल में पहले ही बग़ावत चल रही थी। उसामा मुल्क-ए-शाम में बलिका के इलाक़े में पहुंचे जहां ज़ैद को मारा गया था और उसामा ने उबनाई की बस्ती पर हमला किया उनकी फ़तह से अहले मदीना जो कि इर्तिदाद की ख़बरों की वजह से शदीद परेशान थे उनमें ख़ुशी की लहर दौड़ गई। अतः इस मुहिम ने एक उमूमी मुहिम की हैसियत से ज़्यादा बढ़कर एहमीयत हासिल कर ली जिसकी वजह से इस मुहिम को फ़तह शाम का पेश-ख़ेमा क़रार दिया गया।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को जो एक और चैलेंज का सामना करना पड़ा वह था दुश्मनों और मुनकरीन-ए-ज़कात और उनका फ़िर्क़ा जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात की ख़बर सारे अरब में फैल गई तो हर तरफ़ इर्तिदाद और बग़ावत के शोले भड़कने लगे। अल्लामा इवने इसहाक़ कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक़्त समस्त अरब ने इर्तिदाद इख़तियार कर लिया सिवाए दो मस्जिद वालों के अर्थात मक्का और मदीना के। (अल् बिदाया वन्नहाया ले इब्ने कसीर, भाग 3 भाग 6 पृष्ठ 309 फ़सल फ़ी तनफ़ीज़ जैश उसामा बिन ज़ैद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मक्का वाले इर्तिदाद से महफ़ूज़ रहे जिसकी तफ़सील यूं मिलती है कि सुहेल बिन अम्र जिन्हों ने फ़तह मक्का के अवसर पर इस्लाम क़बूल किया था वे ग़ज़वा ए बदर में काफ़िर होने की हालत में मुस्लमानों के क़ैदी बने। उन्होंने अपने होंटों पर निशान बना रखे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस के सामने वाले दो दाँत निकलवा दें जहां उसने निशान बनाए हुए हैं। ये आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ कभी भी ख़िताब करने के लिए खड़ा नहीं हो सकेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हे उम्र उसे छोड़ दो क़रीब है कि ये ऐसे मुक़ाम पर खड़ा हो कि तुम उस की तारीफ़ करो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तो इस को सज़ा दिलवाना चाहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा नहीं, कुछ नहीं कहना। एक अवसर आएगा जब ये इस मुक़ाम पर खड़ा होगा और ऐसी बातें करेगा कि तुम उस की तारीफ़ करोगे। बहरहाल वे कहते हैं कि यह मुक़ाम उस वक़्त आया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो मक्का वाले लड़खड़ा गए। जब क़ुरैश ने अहल-ए-अरब को मुर्तद होते देखा और हज़रत अत्ताब बिन आसीद उमवी रज़ियल्लाहु अन्हु जो कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से अहल-ए-मक्का पर अमीर निर्धारित थे वह छिप गए तो उस वक़्त हज़रत सुहेल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु ख़िताब करते हुए खड़े हुए कहा : हे क़ुरैश के गिरोह आख़िर में इस्लाम ला कर सबसे पहले इर्तिदाद इख़तियार करने वाले न बनना। ख़ुदा की क़सम ये दीन इसी तरह फैलेगा जिस तरह कि चांद और सूरज तलूअ से ग़ुरूब तक फैलते हैं। इस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्थात सुहेल ने एक लम्बा भाषण दिया। इस लिए इस भाषण ने मक्का वालों के दिलों पर-असर किया और रुक गए। हज़रत आत्ताब बिन असील रज़ियल्लाहु अन्हु जो छिप गए थे वह भी बुलाए गए और क़ुरैश इस्लाम पर साबित-क़दम हो गए।

(ओसोदुल ग़ाबा, भाग 2 पृष्ठ 585 सुहेल बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु, मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

वे लोग जिन्हों ने इर्तिदाद इख़तियार किया था उनकी अत्यधिक इक़साम थीं। उनका वर्णन करते हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत पर एक लिखने वाले लिखते हैं कि इर्तिदाद की भी अलग अलग शक्लें रही हैं। कुछ लोगों ने तो सिरे से इस्लाम छोड़कर मिथ्या विद्या मूर्ती पूजा इख़तियार कर ली। कुछ लोगों ने नबुव्वत का दावा किया। कुछ लोग इस्लाम के स्वीकारी रहे। नमाज़ भी क़ायम करते रहे लेकिन ज़कात की अदायगी से रुक गए। कुछ लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से ख़ुश हुए और जाहिली आदात-ओ-आमाल में लग गए। कुछ लोग हैरत और तरद्दुद का शिकार हुए और इस इंतिज़ार में लग गए कि किस को ग़लबा मिलता है। इन समस्त शक्लों की वज़ाहत सीरत और फ़िक़्ह के उल्मा ने की है। इमाम ख़ताबी कहते हैं कि मुर्तद होने वाले दो तरह के थे एक तो वे जो दीन से मुर्तद हुए। मिल्लत को छोड़ा और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए। इस फ़िरक़े के दो गिरोह थे एक गिरोह उन लोगों का था जो मुसैलमा कज़्ज़ाब और अस्वद अनसी पर ईमान लाए। उनकी नबुव्वत की तसदीक़ की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत का इंकार किया। दूसरा गिरोह उन लोगों का था जो दीन-ए-इस्लाम में मुर्तद हुए। शरई अहकाम का इंकार किया। नमाज़ और ज़कात इत्यादि जैसे कार्यों के छोड़ कर जाहिली दीन की तरफ़ लौट गए और मुर्तद होने वालों की दूसरी किस्म उन लोगों की थी जिन्हों ने नमाज़ औ ज़कात के मध्य तफ़रीक़ की। नमाज़ का इक़रार किया और ज़कात की फ़र्ज़ीयत और उसे ख़लीफ़ा को देने के वजूब से इंकार किया। इन ज़कात रोकने वालों में से ऐसे लोग भी थे जो ज़कात चाहते थे लेकिन उनके सरदारों ने उनको इस से रोक रखा था।

मुर्तद होने वालों की जो मुख़्तलिफ़ प्रकार में हैं इस तक़सीम से क़रीब क़ाज़ी अयाज़ की तक़सीम है लेकिन उन्होंने तीन क़िस्में वर्णन की हैं एक वे जिन्हों ने बुतपरस्ती इख़तियार कर ली ; दूसरे वे जिन्हों ने मुसैलमा कज़्ज़ाब और अस्वद अंसी की पैरवी की, दोनों नबुव्वत के दावेदार थे ; तीसरे वे जो इस्लाम पर क़ायम रहे लेकिन ज़कात का इंकार किया और इस तावील के शिकार हुए कि इस की फ़र्ज़ीयत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर तक सीमित थी।

फिर एक डाक्टर अब्दुर्रहमान हैं वह कहते हैं कि मुर्तद होने वालों की चार किस्में हैं एक वह जो बुतपरस्ती में लग गए ; दूसरे वे जिन्हों ने झूठे नबुव्वत का दावा करने वालों अस्वद अनसी, मुसैलमा कज़्ज़ाब और सजा की इत्तिबा की, और तीसरे वे जिन्हों ने ज़कात के वाजिब होने का इंकार किया, और चौथे वे जिन्हों ने वजूब ज़कात का तो इंकार नहीं किया लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को देने से इंकार किया। (उद्धरित सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली मोहम्मद सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 272-273 मकतबा अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

वे क़बायल जिन्हों ने ज़कात देने से इंकार किया था उनमें नुमायां मदीना के क़रीबी क़बायल अबस और ज़ुबियान और उनसे जुड़े क़बायल बनू किनानाह , ग़तफान और फ़ज़ारह थे।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 101 इल्मों-और-इर्फ़ान पब्लिशरज़ लाहौर)

क़बीला हौज़ान वाले मुर्तद थे उन्होंने भी ज़कात की अदायगी से इंकार कर दिया था।

(तारीख़ तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 254 दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.)

ज़कात देने से इंकार करने वालों के हवाले से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का सहाबा से मश्वरा तलब करने का वर्णन मिलता है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बड़े सहाबा को जमा कर के उनसे मुनकरीन ज़कात के साथ जंग करने के सम्बन्धित में मश्वरा किया। जो अपने आपको मुस्लमान कहते थे लेकिन ज़कात से इंकारी थे। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु और बेशतर मुस्लमानों की यह राय थी कि हमें अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाने वाले लोगों से कदापि नहीं लड़ना चाहिए बल्कि उन्हें साथ मिला कर मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ कार्य करना चाहिए। कुछ लोग इस राय के मुख़ालिफ़ भी थे लेकिन उनकी संख्या बहुत थोड़ी थी।

(उद्धरित हज़रत सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 135 मकतबा जदीद लाहौर)

एक रिवायत के अनुसार सहाबा ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को मश्वरा दिया कि ज़कात से इंकार करने वालों को उनकी हालत पर छोड़ दें और उनकी तालीफ़ क़लब करें यहां तक कि ईमान उनके दिलों में दाख़िल हो जाए फिर उनसे ज़कात वसूल की जाये। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसको न माना और इंकार कर दिया।

(अल् बिदाया वन्नहाया, भाग 3 हिस्सा 6 पृष्ठ 308 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु इस राय के समर्थक थे कि मुनकरीन-ए-ज़कात से जंग कर के ताकत के साथ ज़कात पर मजबूर करना चाहिए। इस अमर में उनकी शिद्दत का यह आलम था कि बेहस करते हुए पुरज़ोर अलफ़ाज़ में फ़रमाया।

ख़ुदा की कसम अगर मुनकरीन-ए-ज़कात मुझे एक रस्सी देने से भी इंकार करेंगे जिसे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में अदा किया करते थे तो भी मैं उनसे जंग करूँगा।

(उद्धरित हज़रत सय्यदना अबू बक़र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 136-135 मकतबा जदीद लाहौर)

बुख़ारी की एक रिवायत में इस अमर की तफ़सील यूं बयान है। अबू हुरैरा वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि आप लोगों से कैसे लड़ेंगे जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتّٰى يَقُوْلُوْا لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ فَمَنْ قَالَهَا فَقَدْ عَصَمَ مِنِّيْ مَالَهٗ وَنَفْسَهٗ إِلَّا بِحَقِّهٖ وَحِسَابُهٗ عَلَى اللهِ- मुझे हुक्म दिया है कि मैं लोगों से लड़ाई करूँ यहां तक कि वे ला इलाह इल्लला का इक़रार करें और जिसने इस का इक़रार कर लिया उसने मुझसे अपना माल और अपनी जान बचा ली सिवाए किसी हक़ की बिना पर और इस का हिसाब अल्लाह के ज़िम्मा है। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा की कसम मैं ज़रूर क़िताल करूँगा उस से जिसने नमाज़ और ज़कात के मध्य फ़र्क़ किया क्योंकि ज़कात माल का हक़ है। ख़ुदा की कसम अगर उन्होंने बकरी का बच्चा भी मुझे न दिया जो वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अदा किया करते थे तो मैं इस को रोकने पर उनसे क़िताल करूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अतः अल्लाह की क़सम ये न हुआ परन्तु अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का सीना खोल दिया। मैं जान गया कि यही हक़ है।(सही बुख़ारी किताब ज़कात, बाब वाजिब अल् ज़कात, हदीस नंबर 1400 1399) अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बाद में तस्लीम करना पड़ा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सही फ़र्मा रहे थे।

हज़रत-ए-सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली उल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हदीस صَمَ مِنِّيْ مَالَهٗ وَنَفْسَهٗ إِلَّا بِحَقِّهٖ की व्याख्या वर्णन करते हुए लिखा है कि "إِلَّا بِحَقِّ الْإِسْلَامِ का समस्त नफ़स-ए-मज़मून पर और ज़्यादा रोशनी डालता है। एक मुस्लमान व्यक्ति ला इलाह इल्लला का इक़रार करते हुए अगर इस्लामी हुक़ूक़ की निगेहदाशत नहीं रखता तो वह भी काबले मावाख़ज़ा है। केवल ईमान ला कर वह सज़ा से नहीं बच सकता। بِحَقِّ الْإِسْلَامِ के दो तरह माने किए जा सकते हैं। एक यह कि जहां इस्लामी हुक़ूक़ का ताल्लुक़ हूहक़" मुसद्दिर है जो जमा का मफ़हूम भी देता है दूसरे यह अर्थ हैं जहां इस्लाम इन मालों और जानों के लेने को ज़रूरी क़रार देता हो। حَقَّ الْأَمْرَ: أَثْبَتَهٗ وَاَوْجَبَهٗ ى अर्थात उस को ज़रूरी क़रार दिया। ये मुतअद्दी के अर्थ में भी इस्तिमाल होता है।" (सही बुख़ारी, किताब अल् ईमान, भाग 1 पृष्ठ 65)

"अफ़राद-ए-उम्मत की सलामती का निर्भरता हुक़ूक़ की अदायगी ही पर है। जिस तरह टैक्स की अदमे अदाइगी बग़ावत और उचित सज़ा है। इसी तरह ज़कात की अदमे अदाइगी भी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से इत्तिफ़ाक़ नहीं किया परन्तु जब إِلَّا بِحَقِّهٖ के शब्दों से उनका इस्तिदलाल सुना तो उनकी राय तस्लीम की। इस वाक़िया से ज़ाहिर है कि केवल भाषा से ला इलाह इल्लला कह देना अमल सालेह न होने की हालत में विल्कुल कोई हक़ीक़त नहीं रखता इस बाब का शीर्षक यह आयत है فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ-

इस सूरत में मज़कूरा बाला आयत का मज़मून दोहराते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है। فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ अर्थात अगर तौबा कर लें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें तो वे दीन मैं तुम्हारे भाई हैं उनसे झगड़ा नहीं किया जाए। इन शब्दों से साबित होता है कि इन तीन बातों में से कोई एक बात तर्क करने वाला मुस्लमान नहीं। इस्लाम के पांचों अरकान की पाबंदी फ़र्ज़ है। ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी إِلَّا بِحَقِّهٖ फ़र्मा कर इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह को समाज के कमज़ोर वर्ग का हक़ क़रार दिया है। अर्थात ताकत रखने वाले लोगों का फ़र्ज़ है कि अहकाम-ए-इस्लामी की पाबंदी करें और जो माली हक़ उन पर आइद किया गया है वे अदा करें। इस सूरत में उनके हुक़ूक़ भी महफ़ूज़ रहेंगे।إِلَّا بِحَقِّهٖ के शब्दों से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्तिदलाल अमीक़ और वसीअ नज़र पर दलालत है .... हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक ज़कात की अदमे अदाइगी बग़ावत है और ज़कात न देने वाला इस्लामी समाज का व्यक्ति नहीं रहता और ये कि इस की इस बग़ावत पर इस से जंग करना ज़रूरी है। निसंदेह इस्लाम ने لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ- (दीन में कोई जबर नहीं)के इरशाद से दीन के बारे में आज़ादी दी है परन्तु जो फ़र्द बज़ाहिर इस्लाम का दावेदार है और इस्लामी सोसाइटी में शामिल हो कर उस की पनाह में है और इस की बरकात से मुस्तफ़ीद और अपने इजतिमाई हुक़ूक़ से पूरे तौर पर लाभदायक है परन्तु जो फ़रायज़ और वाजिबात इस्लाम ने बहैसीयत इस्लामी मुआशरा के फ़र्द होने की हैसियत से इस पर निर्धारित किए हैं उनको वे अदा नहीं करता तो ऐसा फ़र्द इजतिमाई हिफ़ाज़त और पनाह का हक़ नहीं रखता। दुनिया में कोई हुकूमत भी क़ानून शिकन और बाग़ी लोगों को बर्दाश्त नहीं करती। इस्लामी निज़ाम ज़कात और सदक़ात का ताल्लुक़ दरअसल समाज से है न किसी एक व्यक्ति से। और उसके नतायज और प्रभावों का ताल्लुक़ भी समाज ही से है ख्वाक्ति से नहीं।"

(सही बुख़ारी, किताब अल् ज़कात अनुवादक, भाग 3 पृष्ठ 15-14)

एक रिवायत के अनुसार इस अवसर पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया कि हे ख़लीफ़ रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों के साथ तालीफ़-ए-क़लब और नरमी का सुलूक करें। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि जाहिलियत में तो तुम बड़े बहादुर थे और इस्लाम में अब इस तरह बुज़दिली का प्रदर्शन कर रहे हो।

(उद्धरित मिश्कात मसाबीह, भाग 2 किताब अलफ़ज़ायल और शुमायल, हदीस 6024 पृष्ठ 492 मकतबा दारे अर्कम)

बहरहाल ज़कात बाधा के व्यवहार से उनके साथ जंग और उस के अपनों और ग़ैरों पर क्या परिणाम प्रकट हुए इस बारे में इंशा अल्लाह आगे वर्णन होगा।

आज फिर मैं दुनिया के जो मौजूदा हालात हैं, इस बारे में कहना चाहता हूँ। दुआ करें अल्लाह तआला दोनों तरफ़ की हुकूमतों को अक़ल दे, समझ दे और इन्सानियत का ख़ून करने से ये लोग बाज़ आ जाएं। साथ ही ये जंग-जो है इस से हमें, मुस्लमानों को भी सबक़ लेना चाहिए कि किस तरह ये लोग एक हो गए हैं लेकिन मुस्लमान बावजूद एक कलिमा पढ़ने के कभी एक नहीं होते। एक मुल्क तबाह किया, इराक़ तबाह करवाया, सीरिया तबाह करवाया, यमन की तबाही हो रही है और ग़ैरों से करवाते हैं और ख़ुद भी कर रहे हैं बजाय इसके कि एक हों। कम से कम ये इकाई का सबक़ ही ये मुस्लमान उन लोगों से सीख लें।

अल्लाह तआला मुस्लिम क़ौम पर भी रहम करे। मुस्लमानों पर भी रहम करे। मुसलमानों पर रहम करे और ये उसी सूरत में हो सकता है जब ये लोग ज़माने के इमाम को मानने वाले भी हूँ जो इसी उद्देश्य के लिए अल्लाह तआला ने इस ज़माने में भेजा है। अल्लाह तआला अक़ल और समझ दे और साथ ही जहां ये अपनी हालतें दरुस्त करने वाले हों वहां दुनिया के लिए दुआ भी करें और अपने वसाइल और ज़राए इस्तिमाल कर के दुनिया को जंगों से रोकने वाले भी हों न कि ख़ुद जंगों में शामिल होने वाले।

नमाज़ के बाद मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो सय्यदा केसरा ज़फ़र हाश्मी साहिबा का है जो ज़फ़र इक़बाल हाश्मी साहिब लाहौर की पत्नी थीं पिछले दिनों वफ़ात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन मरहूमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत सय्यद मुहम्मद अली बुख़ारी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की पोती थीं। सय्यद नज़ीर अहमद बुख़ारी साहिब के घर पैदा हुईं। शादी के बाद ये मुख़्तलिफ़ जगहों पर रहीं। 1961 ई. में उनकी शादी हुई थी उस के बाद 1981 ई. में अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर शिफ़्ट हो गईं। वहां लजना की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और सदर के तौर पर भी और सैक्रेटरी के तौर पर भी ख़िदमात अंजाम देती रहीं। नमाज़ और रोज़े की पाबंद थीं। दुआ-गो, हमदरद, मेहमान नवाज़, साबरा और शाकरा, बड़ी नेक और मुख़लिस महिला थीं। ख़िलाफ़त से बे-इंतेहा मुहब्बत और इताअत का सम्बन्ध था। माली तहरीकात में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेती। चंदा साल के शुरू में ही अदा कर दिया करती थीं। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में पति के इलावा पाँच बेटे और एक बेटी शामिल हैं। एक बेटे महमूद इक़बाल हाश्मी साहिब असीराने राहे मौला हैं जो आजकल कैंप जेल लाहौर में हैं। उनको जेल से निकलने की तो इजाज़त नहीं मिली लेकिन बहरहाल इंतिज़ामीया ने यह नरमी का सुलूक किया कि माता की मय्यत को जेल ले जा कर उन्हें माता का आख़िरी दीदार करवा दिया। अहमदियों के ख़िलाफ़ इस्लामी शायर के इस्तिमाल के इल्ज़ाम में इतनी बड़ी सज़ाएं दी जाती हैं कि जनाज़ा पढ़ने के लिए भी जेल से नहीं निकाला गया जबकि बड़े बड़े क़ातिलों को निकलने की इजाज़त मिल

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 14 April 2022 Issue No.15

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

जाती है। बहरहाल अल्लाह तआला इस मुल्क की हुकूमतों पर भी रहम करे। महमूद इक़बाल साहिब और उनके तीन साथियों के ख़िलाफ़ जून 2019 ई. में मुक़द्दमा दर्ज हुआ था। उनकी ज़मानत भी हो गई थी लेकिन फिर अगस्त 2021 ई. में ज़मानत अस्वीकृत हो गई और उनको अदालत में ही दुबारा गिरफ़्तार कर लिया गया। अल्लाह तआला उनकी रिहाई के भी जल्द सामान फ़रमाए। मरहूमा के एक पोते हाशिम इक़बाल हाश्मी साहिब यहां यू.के में मुरब्बी सिलसिला हैं। अल्लाह तआला उनको भी अपनी दादी की नेकियों पर अमल करने की तौफ़ीक़ दे, उनकी औलाद को भी अमल करने की तौफ़ीक़ दे। मरहूमा से मग़फ़िरत का सुलूक फ़रमाए। ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें!
(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है। (सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

★ ★ ★

सदक़तुल फ़ित्र का देना

अल्-हमदो लिल्लाह रमज़ानुल मुबारक का पवित्र महीना अप्रैल की पहली दहाई से शुरू हो रहा है। इस्लाम में फ़ित्राना की अदायगी के लिए एक साअ अर्थात क़रीबन 2 किलो 750 ग्राम अनाज की शरह निर्धारित है। जमआत के लोग पूरी शरह के साथ रमज़ानुल मुबारक की पहली या दूसरी दहाई के अंदर अंदर ही सदक़तुल फ़ित्र की अदायगी की कोशिश करें। चूँकि भारत के विभिन्न राज्यों में आहार (गंदुम, चावल) की क़ीमत अलग अलग हैं इस लिए अपनी स्थानीय क़ीमत के अनुसार निर्धारित शरह 2 किलो 750 ग्राम (आहार) के अनुसार फ़ितराना की रक़म की अदायगी करें। पंजाब के लिए इस वर्ष सदक़तुल फ़ित्र की रक़म तकरीबन छप्पन रुपये (rs.56/) निर्धारित की गई है।

स्थानीय जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद मौजूद होने की सूरत में सदक़तुल फ़ित्र की मजमूई रक़म में से नव्वे फ़ीसद तक की रक़म मज्लिस-ए-आमला के मश्वरा और फ़ैसला के बाद तक़सीम की जा सकती है बक़ीया रक़म मर्कज़ में जमा करवानी होगी। जिस जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद न हों उस जमाअत की वसूल शूदा समस्त रकमें सदर अंजुमन अहमदिया के जमाअती एकाऊंट में आनी चाहिए।

स्पष्ट रहे कि फ़ित्राना की रक़म मसाजिद इत्यादि की ज़रूरत पर ख़र्च करने की आज्ञा नहीं है। (नाज़िर बैतुल माल क़ादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad